Janmashtami Katha In Hindi

द्वापर युग की बात है, मथुरा में उग्रसेन नाम का प्रतापी राजा हुआ करता था लेकिन उनका स्वभाव सीधा साधा था, जिस कारण से उनके पुत्र कंस द्वारा उनका राजा हड़प लिया गया तथा वह खुद राजा बन बैठा। कंस की एक बहन भी थी जिसका नाम देवकी था। कंस देवकी बहुत प्रेम करता था, बाद में चलकर देवकी की शादी वसुदेव से हुई। स्कंद पुराण के अनुसार जब कंस बहन की विदाई के लिए जा रहा था तभी आसमान से आकाशवाणी हुई "जिस बहन को तू इतना प्रेम से विदा कर रहा है उसी बहन का आठवां पुत्र तेरा संहार करेगा" यह सुनकर कंस बहुत क्रोधित हो गया और वसुदेव तथा देवकी को मारने के लिए उतारू हो गया।

जैसे ही वह उन दोनों को मारने के लिए आगे बढ़ा तो वसुदेव ने कंस कहा कि आप देवकी को कोई नुकसान ना पहुंचाएं। वह स्वयं ही देवकी की आठवीं संतान को कंस को सौंप देंगे। फिर कंस ने देवकी तथा वसुदेव को मारने की बजाय कारागार में बंदी बना दिया। फिर कंस ने देवकी के सातों पुत्रों को एक-एक करके मार दिया। लेकिन जब वह देवकी की आठवीं संतान का जन्म होने वाला था, तब आसमान में बिजली कड़क रही थी। मान्यता के अनुसार मध्य रात्रि 12:00 बजे जेल के सभी ताले खुद ही टूट गए और वहां पहरेदारी करने वाले सभी सोनिक गहरी निंद्रा में सो गए। कहा जाता है कि उस समय भगवान विष्णु प्रकट हुए और उन्हें वासुदेव-देवकी को बताया कि वह देवकी के कोख से जन्म लेंगे। और श्री हरि ने कहा कि वह उन्हें यानी उनके अवतार को गोकुल में नंद बाबा के पास छोड़ आए और उनके घर जन्मी कन्या को मथुरा लाकर कंस को सौंप दें।

वसुदेव ने वैसा ही किया जैसे ही भगवान श्री कृष्ण जी ने भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को जन्म लिया वैसे ही कारागार के सभी ताले खुल गए हैं और वहां मौजूद सभी पहरेदार सो गए और वसुदेव जी ने नन्हे कान्हा को टोकरी में रखते हुए तेज बारिश होने के बावजूद भी गोकुल की ओर निकल पड़े। उस वक्त अधिक वर्षा के कारण यमुना का जलस्तर भी बहुत अधिक था जैसे ही वसुदेव नंद बाबा के घर पहुंचे उन्होंने कन्हैया को वहां रख दिया और कन्या को अपने साथ ले आए।

जैसे ही कंस को यह सूचना पहुंची की देवकी को आठवें पुत्र ने जन्म लिया है तो वह उसे मारने के लिए कारागार में आया और जैसे ही कंस ने कन्या को मारने का प्रयत्न किया तो कन्या ने माया का रूप लिया और कहा मुझे मारने से तेरा क्या होगा तेरा काल पहले ही इस धरती पर अवतरित हो चुका है। उसके बाद कंस ने कृष्ण को मारने के लिए कई राक्षस भेजे लेकिन वह कृष्ण का बाल भी बांका ना कर पाया। और यही कथा जन्माष्टमी के दिन सुनी एवं सुनाई जाती है। इस कथा को सुनने से कष्ट एवं दुख दूर हो जाते हैं और शांति संपदा की प्राप्ति होती है।

Download All Type PDF: https://pdfseva.com/